आरएनआई नं. . RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. . RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस, उदयपुर
प्रेषण दिनांक: -प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2573 • उदयपुर, सोमवार 10 जनवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

लखनऊ (उत्तरप्रदेश), अटल स्वास्थ्य मेले में दिव्यांग जाँच ऑपरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का कम सतत कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 23 दिसम्बर 2021 को अटल स्वास्थ्य मेले में डी.ए.वी. कॉलेज ऐशबाग रोड आर्यनगर चारबाग लखनऊ में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्त्ता भारत विकास परिषद देवनगरी, सिरोही रही। शिविर में 110 का रजिट्रेशन, दिव्यांगों के लिये कृत्रिम अंग माप 04, केलीपर माप 15, ट्राईसाईकल वितरण 15, व्हीलचेयर 05, वैशाखी 15 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री दिनेश जी शर्मा (उप मुख्यमंत्री महोदय), अध्यक्षता श्री आशुतोष जी टण्डल (नगर विकास मंत्री महोदय), विशिष्ट अतिथि संयुक्त भाटीया जी (महापौर महोदय लखनऊ), श्री डॉ निरज जी बोरा, श्री सुरेश जी तिवारी (विधायक महोदय), श्री अभिषेक प्रकाशक जी (जिला कलक्टर महोदय), शिविर टीम श्री नाथुसिंह जी, (टेक्नीशियन), श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा (शिविर प्रभारी), श्री सुनिल जी श्रीवास्तव (सहायक), श्री बद्रीलाल जी (आश्रम प्रभारी), श्री मुन्ना सिंह (विडियोग्राफर) सुश्री नेहा जी (पी. एन. डो) ने भी सेवायें दी।

सुगम हुआ अनोखी का जीवन

व्यक्ति की जिन्दगी में जब सब कुछ ठीक–ठाक चल रहा होता है और वह अपनी गृहस्थी को लेकर सपने बुनता है, अनायास कोई घटना उसके सपनों को छिन्न–भिन्न कर देती है। ऐसी स्थिति में जो निराश होकर भी हौसले से काम लेते हैं,उन्हें कोई न कोई सम्बल मिल ही जाता है। राजस्थान के धौलपुर जिले के मलक पाड़ा–बाड़ी गांव के विवेक गर्ग के साथ कुछ ऐसा ही हुआ कि उनकी गृहस्थी आंसूओं में डूब गई। उनके घर में जल्दी ही पहली संतान आने की खुशी थी। 18 सितम्बर, 2013 को घर में लक्ष्मी आने की जो खुशी मिली कुछ ही पलों बाद वह काफूर हो गई।

नवजात बच्ची का दायां पांव टखने की हड्डियों में विकृति के कारण मुड़ा हुआ, जबकि बांए हाथ का पंजा भी अंगूठे और उंगलियों में विकृति लिए हुए था। बालिका का नाम अनोखी रखा गया। जब वह एक साल की हुई तो उसे गोदी में ही उठाकर इधर–उधर ले जाना पड़ता था। चार वर्ष की होने पर उसे स्कूल में दाखिल तो करवा दिया गया लेकिन गोदी में ही उसे लाना ले जाना पड़ता था। इस दौरान माता–पिता को मजदूरी और घर के कामों में परेशानी का सामना करना पड़ा। दो–तीन साल बाद घर में दूसरी बच्ची ने जन्म लिया, जो एकदम सामान्य थी। अनोखी को इलाज के लिए जयपुर भी ले जाया गया लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। इस बीच इन्हें इस तरह के दिव्यांग बच्चों के निःशुल्क इलाज के लिए नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के बारे में सूचना मिली। सन् 2017 में चार वर्ष की अनोखी को लेकर माता–पिता नीतू–विवेक गर्ग उदयपुर आए। जहां डॉक्टरों ने परीक्षण कर उसके लिए विशेष कैलिपर बनाया। जिसके सहारे अनोखी अब थोड़ा चलती भी है और खुश है।

अब उम्र बढ़ने के साथ तीसरी में पढ़ने वाली 9 साल की अनोखी के लिए अक्टूम्बर, 2021 में कैलिपर बदला गया है।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

आत्मीय स्नेह मिलन
एवं
भामाशाह सम्मान समारोह
स्थान व समय
रविवार 16 जनवरी 2022 प्रातः 04.00 बजे से

श्री दुर्गा मंदिर, पंचकुला, हरियाणा
7412060406

विध्यभवन, बेकर हॉल,
कटंगा टी. वी. टॉवर के पास,
जबलपुर, मध्यप्रदेश- 935 1230393

इस सम्मान समारोह में
सभी दानवीर, भामाशाह सादर आमन्त्रित है।

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org
+91 7023509999
+91 2946622222

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ - पांव) माप शिविर
रविवार 16 जनवरी 2022 प्रातः 9.00 बजे से
स्थान

स्टेडियम वार्ड न. 10
फजलगंज सासाराम,
जिला - रोहतास, बिहार

आरपीआईसी स्कूल सिसवा,
बाजार जनपद,
सिसवा, महाराजगंज, उत्तरप्रदेश

विध्यभवन, बेकर हॉल,
कटंगा टी. वी. टॉवर के पास,
जबलपुर, मध्यप्रदेश

ओम पैलेस शक्तिनगर,
जम्मू एवं कश्मीर

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमन्त्रित है एवं अपने क्षेत्र में
जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

शेष जिंदगी हुई आसान

संस्थान द्वारा गत दिनों में विभिन्न शहरों में शिविर आयोजित कर दुर्घटनाओं में अंग (हाथ–पैर) खोने वाले भाई–बहनों को निःशुल्क कृत्रिम अंग लगाए गए। इससे पूर्व आयोजित शिविरों में कृत्रिम अंग बनाने के लिए प्रोस्थेटिक इंजीनियर द्वारा उनके कटे अंग की मैजरमेंट प्रक्रिया पूरी की गई।

आकोला – महाराष्ट्र आकोला स्थित संस्थान शाखा के तत्वावधान में दो दिवसीय विशाल निःशुल्क कृत्रिम अंग वितरण शिविर आयोजित किया गया। खंडेलवाल भवन में सम्पन्न शिविर के मुख्य अतिथि खंडेलवाल समाज के अध्यक्ष श्री गोपाल जी खंडेलवाल थे। अध्यक्षता दमामी नेत्र चिकित्सालय के निदेशक श्री सभापति जी ने की।

शाखा संयोजक श्री हरीश जी मानधणे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जिसके अनुसार शिविर में 195 दिव्यांगों ने पंजीयन करवाया। जिनमें से 175 को कृत्रिम हाथ–पैर लगाए गए, जबकि 20 दिव्यांगों को टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी व श्री नरेश जी वैष्णव ने कैलिपर लगाए। शिविर के विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक श्री रणधीर जी सावरकर, उद्योगपति दीपक बाबू जी भरतीया, श्री शिवभगवान जी माला, श्रीमति मंजू देवी जी गोयना व श्री सुभाष जी लोढ़ा थे। संचालन हरिप्रसाद जी लढ्ढ़ा ने किया।

भुज –

गुजरात के भुज शहर में विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच, आपॅरेशन चयन तथा कृत्रिम अंग माप शिविर आयोजित किया गया। श्री घनश्यामसिंह जी झाला के सहयोग से दशनाम गोस्वामी वाड़ी में संस्थान के तत्वावधान में सम्पन्न इस शिविर में 82 दिव्यांगों का पंजीयन हुआ। मुख्य अतिथि क्षेत्रीय सांसद श्री विनोद जी भाई चाबड़ थे, जबकि अध्यक्षता आयोजक समाजसेवी श्री घनश्याम सिंह जी झाला ने की।

शिविर में 21 दिव्यागों के लिए कृत्रिम अंग तथा 4 के लिए केलिपर बनाने का नाप टेक्नीशियन श्री नाथुसिंह जी ने लिया। डॉ. सिहार्थसंगा जी ने दिव्यांगों की जांच कर उनमें से 13 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया।

शिविर में विशिष्ट अतिथि जे.वी.सी. ग्रुप गांधीधाम की अध्यक्षता श्रीमती पारूल जी बेन सोनी श्री भरतभाई जै. जी गौड़, श्री राममाई जी मेहता व योगेश भाई जी सोनी थे। संस्थान के राजकोट आश्रम प्रभारी श्री तरुण जी नागदा ने अतिथियों का स्वागत–सत्कार किया। संचालन व व्यवस्था में प्रभारी हरिप्रसाद जी लढ्ढा ने सहयोग किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

बहनों और भाइयों मैं इसलिये आपके पास आता हूँ। मैं भी आप जैसा ही हूँ। सुख–दुःख सब देखा है। गांठे, मेरे मन में भी है, मैं कहाँ पूर्ण निर्विकार हो गया ? मेरे को भी क्रोध आता है। पण मैं क्रोध को जीणा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। जितनी भी रामचरित मानस के ग्रन्थ में चौपाइयाँ, हजारों चौपाइयाँ है। हजारों दोहे हैं, हजारों कई छंद, कई मंत्र, मंगलाचरण।

हर कांण्ड में मंगलाचरण, मंगल आचरण। कैकेयी का मंगल आचरण नहीं। मंगल आचरण आगे चन्द्रमा की तरफ चलें। पूर्ण चन्द्रमा, चाँदनी रात की पूर्णिमा का चन्द्रमा। कुछ पंक्तियाँ साकेत की, उन कवि ने लिखी राष्ट्रकवि ने। झांसी जिले में, एक चिरगांव नाम का एक छोटा सा गाँव।

अग्रसेन जी महाराज के वंशज हुए। उन्होंने साकेत में लिखा है– राम तुम ईश्वर नहीं हो क्या, यदि राम तुम ईश्वर नहीं हो तो मैं किसी ईश्वर को जानता ही नहीं। मैं किसी ईश्वर को प्रणाम ही नहीं करता। राम ईश्वर है, राम भगवान हैं। राम चतुर्भूज विष्णु का अवतार हैं। राम ही राम, राम–राम।

सरल सुभाव राम महतारी।
बोली वचन गिरधर हारि।।

सम्पादकीय

परिवारों में प्रेम –स्नेह की धारा बहती रहे तो वह आदर्श परिवार हो जाता है। इसके लिये परिवार के हर सदस्य का अपना योगदान आवश्यक है। प्रत्येक परिवार में बड़ी आयु के सदस्य भी होते है। तो छोटी आयु के भी। जो बड़ी आयु के वे हर प्रकार से अनुभवी है, उन्होंने कई परिवार के प्रेम – स्नेह या राग द्वेष को देखा – जाना होता है। वे अपने जीवन में भी में भी अभावों के कारण, नासमझी के कारण या पीढ़ी अंतराल के कारण कभी न कभी, किसी न किसी स्तर पर प्रभावित हुए है। उस नकारात्मकता से निकलने का उनका अपना अनुभव है। इसलिये उनका परम कर्तव्य है। कि ये पिछली पीढ़ी को इस तरह शिक्षित व संस्कारित करें कि उनमें आई सकारात्मकता से भावी पीढ़ी बचे। ऐसे छोटी आयु वालों को यह समझना चाहिये कि बड़ों ने जो सीखा है वह अनुभव जन्य है प्रायोगिक है, जबकि हमारी जानकारियां केवल सुनी – सुनाई है। ऐसा भाव जिस परिवार में हो वह कि संस्कारित व स्नेहिल परिवार होगा।

कुछ काव्यमय

परिवार केवल एक
संस्थान नहीं, भाव मंदिर है।
हर सदस्य इसके हाथ, पैर
मांस, मज्जा और रूधिर है।
इनका सामंजस्य ही परिवार
को जोड़े रखेगा।
यह भाव सदस्य ही रख पायेंगे।
कोई अन्य थोड़े रखेगा।

- बरदीचन्द राव

अपनों से अपनी बात

भक्ति कौन कर सकता है

पुराने समय में एक व्यक्ति गुस्सा बहुत करता था। उसमें धैर्य की भी कमी थी। घर में छोटी–छोटी बातों पर वह क्लेश करने लगता था। घर में रोज वाद–विवाद होते थे, एक दिन दुखी होकर वह जंगल की ओर चल दिया।

जगंल में एक संत कुटिया बनाकर रह रहे थे। वह व्यक्ति संत के पास पहुंचा और बोला कि गुरुजी, मुझे आपका शिष्य बना लें। मुझे संन्यास लेना है। मैं मेरा घर–परिवार सब कुछ छोड़कर अब भक्ति करना चाहता हूं।

संत ने उससे पूछा कि पहले तुम ये बताओ कि क्या तुम्हें अपने घर में किसी से प्रेम है? व्यक्ति ने कहा कि नहीं, मैं अपने परिवार में किसी से प्रेम नहीं करता। मेरे घर में बात–बात पर झगड़े होते हैं। कोई मेरी बात नहीं मानता है।

संत ने कहा कि क्या तुम्हें अपने माता–पिता, भाई–बहन, पत्नी और

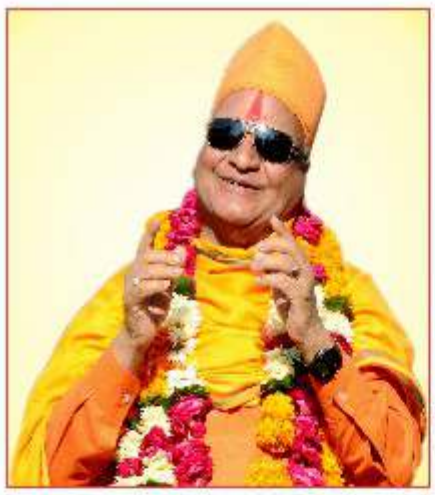

बच्चों में से किसी से भी लगाव नहीं है।

व्यक्ति ने कहा कि गुरुजी मेरे घर के सभी लोग स्वार्थी हैं। मुझे किसी से लगाव नहीं है, इसीलिए मैं सब कुछ छोड़कर संन्यास लेना चाहता हूं।

संत ने कहा कि तुम मुझे माफ करो। मैं तुम्हें संन्यासी नहीं बना सकता। तुम्हारा मन अशांत है, तुम गुस्सा करते हो, तुममें धैर्य नहीं है, संन्यासी वही बन सकता है, जिनमें ये बुराइयां नहीं होती हैं। मैं तुम्हारे अशांत मन को शांत नहीं कर सकता।

संत ने आगे कहा कि भाई अगर तुम्हें अपने परिवार से थोड़ा भी स्नेह होता तो मैं उसे और बढ़ा सकता था, अगर तुम अपने माता–पिता से प्रेम करते तो मैं इस प्रेम को बढ़ाकर तुम्हें भगवान की भक्ति में लगा सकता था, लेकिन गुस्सा की वजह से तुम्हारा मन बहुत कठोर हो गया है। एक छोटा सा बीज ही विशाल वृक्ष बनता है, लेकिन तुम्हारे मन में प्रेम और धैर्य का कोई भाव है ही नहीं।

व्यक्ति को संत की बातें समझ आ गई। उसने संकल्प लिया कि अब से वह गुस्सा नहीं करेगा और धैर्य से काम लेगा। इसके बाद वह अपने परिवार में लौट गया। बदले स्वभाव की वजह से उसके परिवार में सबकुछ ठीक हो और उसका मन भक्ति में भी लगने लगा। जो लोग गुस्सा करते हैं, जिनमें धैर्य नहीं है, वे कभी भी भक्ति नहीं कर पाते हैं।

–कैलाश 'मानव'

हंसना सीखों मेरे भाई

कहते है ना कि सबसे बडा सुख क्या है? पहला सुख निरोगी काया, दूसरा सुख घर में माया। लेकिन आपको ये बता दूँ मैं, कि सबसे बडा सुख है प्रसन्न रहना, प्रेम रखना और चेहरे पर हर समय खुशी रखना, सदैव मुसकुराते रहना। ये जिसके पास है वो सबसे सुखी आदमी है।

एक गाँव में एक विदेशी आदमी आया। उस गाँव के बारे में उसने काफी कुछ सुन रखा था। उसने वहाँ काफी सुन्दर जगह देखी। वहाँ के लोग विदेशी यात्रियों की काफी सहायता

करते थे। लेकिन हर व्यक्ति पैसे के पीछे भागता हुआ मिला। कोई भी व्यक्ति मनोरंजन के लिये कुछ नहीं करता। न ही वो हँसते, न ही लोगों से हास्यरस की बातें करते। यह देखकर विदेशी यात्री को दुःख हुआ। उसने सोचा क्यों न इन्हें जीवन में आनन्द लेने की कला सिखायी जाये। इस बात को ध्यान में रखते हुए उसने उस गाँव में एक कला प्रदर्शनी लगवायी। दूर–दूर से लोग वहाँ देखने पहुँचे। उसने उस प्रदर्शनी में आकृति बदलने वाला एक आईना भी लगवाया। सभी ग्रामीण उसमें अपने चेहरे को देखते ही हँस–हँस कर लोट पोट हो जाते। प्रदर्शनी के आखरी दिन उस विदेशी यात्री ने सभी को बुलाया।

उसने सभी से पूछा आपको इस प्रदर्शनी में क्या खास लगा। सभी ने लगभग एक समान ही उत्तर दिया, सभी ने कहा– उन्होंने पहली बार दिल खोलकर हँसा है। उस विदेशी यात्री ने कहा– मेहनत जीवन का अंग है, पैसा जरूरत है लेकिन हँसना जिन्दगी का सबसे महत्व है। इसे लगातार चलाते रहने से आदमी टूट जाता है।

इसलिये जीवन में मनोरंजन होना बहुत जरूरी है। थोड़े–थोड़े समय में थोड़ा–थोड़ा मनोरंजन होना बहुत जरूरी हैं। आप काम के बोझ से टूट जायेंगे। आपको तनाव हो जायेगा। आपका ब्लड प्रेशर बढ़ जायेगा। आपको कई सारी समस्यायें अंदर ही अंदर घर कर जायेगी। इसलिये कुछ–कुछ समय में हँसना और मनोरंजन करना बहुत ही जरूरी हैं। इस जीवन के लिये बहुत ही आनन्ददायक क्षण होता है जब व्यक्ति मित्रों के साथ हँसता है। अगर आपके जीवन में हँसी नहीं है तो आप बहुत बड़ी चीज खो रहे हैं। हँसना सीखो मेरे भाइयों।

सब धर्मों की एक ही बात,
प्यार बढ़ाओ सबके साथ।
सब रोगों की एक दवाई,
हँसना सीखो मेरे भाई।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

इसके पूर्व गणतन्त्र दिवस पर उसे जिला स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका था मगर तब तो उसे बिना किसी आवेदन के ही पुरस्कृत कर दिया गया था। अतिरिक्त जिला कलेक्टर ने जब उसे इसकी सूचना दी थी तब भी यही कहा था कि आप तो कभी आवेदन करते नहीं हो मगर आपकी सेवाओं को देखकर हमें ही आपके नाम की सिफारिश करनी पड़ी।

अगले ही दिन वर्ष 2003 मे नारायण सेवा को दिव्यांगों की सेवा हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार के लिये चयनित किया गया तो यह कैलाश तथा उसके सभी साथियों के लिये अत्यन्त गौरव का क्षण था। दिल्ली के विज्ञान भवन में जब राष्ट्रपति अब्दुल जे. कलाम के हाथों कैलाश ने यह पुरस्कार प्राप्त किया तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उसकी जीवन भर की तपस्या सफल हो गई है। उसी वर्ष कैलाश को उसकी सेवाओं हेतु केन्द्रीय मंत्री मेनका गांधी द्वारा व्यक्तिगत पुरस्कार भी प्रदान किया गया। बाद में हरियाणा के भू. पू. मुख्यमंत्री बनारसी दास गुप्ता की स्मृति में उनके पुत्रों द्वारा स्थापित ट्रस्ट का एक लाख रुपये के नकद पुरस्कार हेतु भी उसका चयन हुआ। यह पुरस्कार संसद के बालयोगी सभागार में तत्कालीन वित्त मंत्री प्रणव मुखर्जी तथा तत्कालीन रेल मंत्री पवन बंसल ने उसे प्रदान किया।

भारत से बाहर पहला शिविर 2005 में नेपाल में किया। तब कैलाश मानसरोवर की यात्रा हेतु नेपाल की एकमात्र मार्ग था। कैलाश ने शिविर के पश्चात् कैलाश मानसरोवर के दर्शन करने का कार्यक्रम पहले ही बना लिया था और इस हेतु वांछित औपचारिकताएं भी पूरी कर ली थी। काठमांडू में भारतीयों का एक क्लोथ मार्केट है, शिविर इनके सहयोग से ही किया। प्रायोजक कलकत्ता की एक संस्था थी। कैलाश के दल में 70 व्यक्ति थे। देवेन्द्र भाई इनमें प्रमुख थे।

अंग - 204

राजश्री का जीवन हुआ आसान

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल के निकटस्थ गांव नारियल खेड़ा निवासी राजश्री ठाकरे (21) का जन्म से ही दांया हाथ बिना पंजे के था। पिता दशरथ ठाकरे मजदूरी करके पांच सदस्यों के परिवार का पोषण कर रहे थे। सितम्बर 2019 में पिता का देहांत हो गया। राजश्री ने एक कॉलेज से ग्रेजुएशन की डिग्री हासिल की। कृत्रिम पंजा अथवा हाथ लगाने के लिए भोपाल के एक बड़े अस्पताल से सम्पर्क भी किया लेकिन आर्थिक तंगी के चलते सम्भव नहीं हो पाया। राजश्री पार्ट टाइम नौकरी कर परिवार पोषण में मदद कर रही है। भोपाल में 22 जनवरी 2021 को नारायण सेवा संस्थान के निःशुल्क कृत्रिम अंग शिविर में राजश्री ने भी पंजीयन करवाया। जहां संस्थान के ऑर्थोटिस्ट–प्रोस्थोटिस्ट ने इनके लिए पंजे सहित एक विशेष कृत्रिम हाथ तैयार किया। राजश्री इस हाथ से अब दैनन्दिन कार्य के साथ लिखने का काम भी आसानी से कर लेती है।